ISBN : 978-93-93705-51-8

Vol. No. 04, Sl. No. 04

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी

Brahmavart Nirjharni

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका

Articles & Creative Writings Published in both Hindi & English

2025

ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज

मन्धना, कानपुर – 209 217

Ownership : The Principal, Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Brahmavart PG College, Bithoor Road, Mandhana, Kanpur
Published by : Ira Publishers, Kanpur
Laser Type Setting & Printed by Satguru Graphics & Printers, Kidwai Nagar, Kanpur

प्रार्थना

वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमिय मन्त्र नव, भारत में भर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
काट अन्ध उर के बन्धन स्तर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर।
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
नव-गति, नव-लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ, नव जलद मन्द रव।
नव-नभ के विहग वृन्द को, नव-पर नव स्वर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी
Brahmavart Nirjharni

Editorial Board
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar
Dr. Amit Kumar Dubey
Dr. Bappa Adhikari
Shri Dinesh Kumar

Magazine Name : ब्रह्मावर्त निर्झरिणी / Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Artricles & Creative Writings published in both Hindi & English Languages

Owner & Patron : Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Principal, Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Contact :

E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in

Website : https://bvpgcollege.in/

Published By : Ira Publishers

Contact :

E-mail : irapublishers@gmail.com

Website : https://irapublishers.in/

Aim & Scope : The **"Brahmavart Nirjharani"**, as a creative as well as academic initiative taken by Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur, is a multidisciplinary, annual journal for research articles and creative writings in both Hindi and Eglish languages. Currently, the journal invites articles in the domain of multidisciplinary research areas and creative writing in both Hindi and English. Apart from these, research works in literature, culture, religion, translation, ethnicity and nationalism, sign language, science, technology and software development related are also encouraged in the above-mentioned languages. It intends to inspire writers, poets and artists to create new works that contribute to the cultural heritage of the region. It aims to encourage critical thinking and intellectual discussions on various topics related to Indian culture and history. The authors strictly adhere to the conditions proposed by the editorial board.

About Us : "Brahmavart Nirjharani" is a magazine dedicated to create intellectual temperament and cultivate the creative faculty of the young minds. Our mission is to promoting cultural heritage, fostering intellectual discourse, and providing informative content. We strive to provide high-quality content, encourage critical thinking, or inspire positive change. Our team of experienced editors is committed to delivering insightful analysis and engaging creativity.

Editorial Board (2025)

Name	Institutional Designation	Department/ Subject	Official Postal Address	E-mail Address
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar	Principal	Physics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	vkkatiyar_kn05@csjmu.ac.in
Dr. Amit Kumar Dubey	Assistant Professor	Hindi	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	amitkumart3340kn10@csjmu.ac.in
Dr. Bappa Adhikari	Assistant Professor	English	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	bappaadhikarit3767kn10@csjmu.ac.in
Shri Dinesh Kumar	Assistant Professor	Economics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	dineshkumarsis13131kn10@csjmu.ac.in

Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Vol. No. 04 Sl. No. 04

ब्रह्मावर्त महाविद्यालय कुलगीत

ज्ञान मन्दिर है ये, ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
उच्च शैक्षिक केन्द्र की संकल्पना से,
नाम ब्रह्मावर्त हो इस धारणा से।
नींव है उन्नीस सौ सत्तर में स्थापित,
उत्तरी गंगा के तट पर है विराजित।
श्रेष्ठता का आओ उद्बोधन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
सृष्टि की उद्गम धरा पर हम खड़े हैं,
वीणापाणि माँ की ममता में बढ़े हैं ।
ब्रह्मा का आवर्त ब्रह्मावर्त है ये,
भाल का टीका, हमारा गर्व है ये ।
भाव की रोली से अभिनन्दन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
शास्त्र संस्कृति और कला की वीथिका है,
षष्ठ रागों से सुसज्जित गीतिका है ।
आधुनिक तकनीक का संकाय है ये,
ज्ञान और विज्ञान का पर्याय है ये ।
बोध की गंगा में अवगाहन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
जानकी माँ से मिली संवेदनाएँ,
लक्ष्मीबाई सी प्रखर हैं बालिकाएँ ।
बालको में तेज है लवकुश सरीखा,
राष्ट्रभक्ति शील और अनुराग सीखा ।
सत्य का सम्पूर्ण अनुशीलन करें हम,
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
त्याग, तप, बलिदान की पावन धरा है।
प्रेम और सौहार्द से परिसर भरा है ।
नित नए आयाम गढ़ते जा रहे हैं,
छात्र-शिक्षक यश-ध्वजा फहरा रहे हैं ।
दक्ष निर्देशन में ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
साथ मिलकर दृढ़ प्रतिज्ञा यह करें हम,
उत्तरोत्तर उन्नयन पथ पर बढ़ें हम ।
राह की कठिनाइयों का भान होगा,
जीत होगी लक्ष्य का संधान होगा ।
जय विजय उद्घोष और गर्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥

डॉ० संजू शब्दिता

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

09 मई, 2024

सन्देश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर द्वारा वर्ष 2024–25 की वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त–निर्झरणी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएं छात्र–छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करती हैं, वहीं शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों को भी दर्शाती है। मुझे आशा है कि प्रकाश्य पत्रिका में महाविद्यालय की शैक्षणिक यात्रा और उत्कृष्ट शिक्षण प्रतिमानों का समावेश किया जायेगा, जो पाठकों के ज्ञानवर्द्धन में सहायक होगी।

पत्रिका 'ब्रह्मावर्त–निर्झरणी' के सफल प्रकाशन हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

(आनंदीबेन पटेल)

प्रो० विनय कुमार पाठक
कुलपति
Prof. Vinay Kumar Pathak
Vice Chancellor

16 मई, 2025

शुभ सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर** अपनी वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त–निर्झरिणी'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएँ, अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की विचारक क्षमता को लिपिबद्ध करने एवं उनकी रचनात्मकता को निखारने का सरल माध्यम होती है। आशा करता हूँ कि महाविद्यालय द्वारा सम्पादित होने वाली वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त–निर्झरणी'** ज्ञानवर्धक एवं रोजगारपरक पाठ्य सामग्री से परिपूर्ण होगी।

इन्हीं कामनाओं के साथ महाविद्यालय के उत्तरोत्तर उन्नयन एवं प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु **बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ**।

प्रो0(विनय कुमार पाठक)

प्रो0(डॉ.) वी.के. कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मन्धना
कानपुर।

प्रमिला पाण्डेय

महापौर

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

ऑल इण्डिया मेयर काउंसिल

दूरभाष :
सी.यू.जी. : 8601801010
आवास : 9415044433
कैम्प कार्या० फैक्स : 2549680
कैम्प कार्या० : नगर निगम गेस्ट हाउस
निवास : 8/2, एफ०एम० कालोनी
सिविल लाइन्स, कानपुर

दिनांक : 14.05.2025

महोदय,

आपके ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर के पत्रांक 49/2025–26 दिनांक 08.05.2025 के माध्यम से संज्ञान में आया है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर वर्ष 1970 में स्थापित तथा उत्तर प्रदेश शासन द्वारा अनुदान प्राप्त संस्थान है। महाविद्यालय में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में स्नातक तथा कला संकाय में परास्नातक डिग्री पाठ्यक्रम संचालित है। विगत वर्ष की भांति महाविद्यालय सत्र 2024–25 की वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** का प्रकाशन करने जा रहा है, जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

सभी उच्च शिक्षा संस्थानों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें, जिससे अपने जीवन में रोजगार पाने, व्यवसाय करने के साथ–साथ श्रेष्ठ नागरिक भी बन सकें। चूँकि प्रकाशित होने वाली पत्रिका एवं पत्रकों के माध्यम से समाज, विद्यार्थी एवं अन्य महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों से अवगत होते हैं।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ प्रकाशित होने वाली पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** के सफलीभूत होने की कामना करती हूँ।

(प्रमिला पाण्डेय)

प्रतिष्ठा में,
प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य,
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज,
मन्धना, कानपुर ।

mayor.kanpur-up@gov.in   @mayorkanpur   /mayorkanpur

डा० अमित भरद्वाज
निदेशक, उच्च शिक्षा, उ०प्र०

उच्च शिक्षा निदेशालय उ०प्र०
सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज–211001
0532–2623874 (का०)
0532–2423919 (फैक्स)
ई–मेल infodheup21@gmail.com

पत्रांक.............................. दिनांक 20/05/2025

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता और गर्व की अनुभूति हो रही है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर द्वारा अपनी पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** सत्र 2024–25 का प्रकाशन करने जा रहा है।

पत्रिका ज्ञानोपयोगी होने के साथ–साथ महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान करेगी। महाविद्यालय द्वारा छात्र/छात्राओं के मानसिक एवं बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय है।

वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** के सफल प्रकाशन हेतु मैं प्राचार्य, मुख्य सम्पादक एवं छात्र–छात्राओं को अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ

डॉ0(अमित भारद्वाज)

प्रो0 वी0के0 कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज
मन्धना, कानपुर।

Web : www.csjmu.ac.in

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur
(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)
(Formelrly Kanpur University Kanpur 208 024)

प्रो० राजेश कुमार द्विवेदी
निदेशक–महाविद्यालय विकास परिषद

दिनांक : 11-05-2025

शुभकामना सन्देश

ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के दनवीन अंक के प्रकाशन पर मैं समस्त प्रबन्धन, शिक्षकों, छात्रों एवं सम्पादकीय समिति को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का सशक्त माध्यम है, बल्कि यह संस्था के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास का जीवन्त दस्तावेज भी है। 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के माध्यम से छात्रों को अपनी सोच, अभिव्यक्ति और विचारशीलता को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच मिलता है, जो उनके सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका ज्ञान, साहित्य, विचार और सृजन का प्रवाह बनकर पाठकों को प्रेरित करेगी और शिक्षा जगत में एक सकारात्मक सन्देश प्रसारित करेगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज सतत् प्रगति करता रहे और ज्ञान के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे।

सधन्यवाद और शुभकामनाएँ।

(प्रो0 राजेश कुमार द्विवेदी)

प्रो0 विपित्य कुमार कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर।

कार्यालय : क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय परिसर
कानपुर मण्डल कानपुर

प्रोफेसर (डॉ०) मुरलीधर राम गुप्ता

अर्धशासकीय पत्र सं० / 829 / 2025–26
दिनांक 14 / 05 / 25

शुभकामना–सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपका महाविद्यालय वर्ष 2024–2025 की अपनी वार्षिक पत्रिका ''ब्रह्मावर्त निर्झरणी'' का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका में जो लेख प्रकाशित होंगे उसको पढ़कर सुधीजन लाभान्वित होंगे।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रोफेसर (डॉ0) मुरलीधर राम गुप्ता
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
कानपुर मण्डल, कानपुर

प्रो0 (डॉ0) वी0 के0 कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कॉलेज, मन्धना
कानपुर नगर।

Mob. No. : 8090024069

Brahmanand Post Graduate College

The Mall, KANPUR-208004

E-mail : bndkanpur@gmail.com ● Website : brahmanandcollege.org.in

Ref. :

Date : 13/05/25

शुभ सन्देश

ब्रह्मावर्त कॉलेज, मन्धना, कानपुर, उत्तर प्रदेश राज्य के इस केन्द्रांचल में विश्वविद्यालयी उच्च शिक्षा का ध्वजवाहक है। यहाँ छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण प्रगति तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए महविद्यालय संस्थान अविरत कार्यशील रहता है। महाविद्यालय के गौरव में अद्यतन वर्षों में हुए कार्यक्रमों और गतिविधियों ने नवीन आयाम और क्षितिजों को प्राप्त किया है।

महाविद्यालय–पत्रिका विद्यालय की नैसर्गिक तस्वीर होती है, जो वर्ष भर के कार्यक्रमों, गतिविधियों की झलक के साथ युवा हृदय और मस्तिष्क को सर्जनात्मक अभिव्यक्ति का सुअवसर प्रदान करती है।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है प्राचार्य, सम्पादक डॉ० अमित कुमार और उनके सम्पादक मण्डल के सदस्यों का यह सामूहिक प्रयास ब्रह्मावर्त कॉलेज, मन्धना, कानपुर की प्रतिष्ठा–वृद्धि में महती योगदान करेगा। इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं अनेकानेक बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

आभार सहित!

प्रो0 विवेक द्विवेदी
प्राचार्य

प्रो0(डॉ.) वी.के. कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मन्धना
कानपुर।

Virendra Kumar Shukla
Advocate
Secretary
Brahmavart P.G. College
Mandhana, Kanpur - 209217

ब्रह्मावर्त पी० जी० कालेज
मन्धना • कानपुर

Estd. : 1970
Office : 0512-2549745
Residence : 0512-2680442
Mob. : 9839217675
104/432, P.Road, Kanpur
E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in
Website : www.bvpgc.co.in

Permanent Affiliation : CSJM University, Kanpur
(Approved U/S 2(f) and 12(B) of UGC Act 1956)

Ref. : .... Date : ....

सन्देश

हमें अत्यन्त प्रसन्नता है कि हमारी महाविद्यालय पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' का नवीनतम अंक आपके हाथों में है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक न केवल हमारे छात्रों के लिए बल्कि समस्त महाविद्यालय परिवार तथा समाज के लिए भी अत्यधिक उपयोगी होगा।

हमारी पत्रिका का उद्देश्य छात्रों को अपनी रचनात्मकता और विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना है। हमें विश्वास है कि इस अंक के माध्यम से हम अपने पाठकों तक महत्वपूर्ण जानकारी और विचार पहुँचाने में सफल होंगे।

मैं ब्रह्मावर्त निर्झरिणी के सफल प्रकाशन हेतु अपने सभी छात्रों और संकाय सदस्यों को इस अंक के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह अंक उन्हें ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक लगेगा। मैं पत्रिका समिति को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस अंक को सम्भव तथा सफल बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव

प्राचार्य का सन्देश

प्रिय विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और अभिभावकों,

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के नवीन अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पत्रिका न केवल हमारे शैक्षणिक परिवार की बौद्धिक गतिविधियों का प्रतिबिम्ब है, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की सृजनशीलता, विचारशीलता और सामाजिक संवेदना का भी दर्पण है। शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करना नहीं है बल्कि जीवन के प्रति एक दृष्टि विकसित करना भी है। जब विद्यार्थी अपने चिन्तन, अनुभव और कल्पना को शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत करते हैं, तब वे ज्ञान के वास्तविक सार से जुड़ते हैं। यही कारण है कि इस पत्रिका को हम केवल एक प्रकाशन न मानकर एक जीवन्त मंच मानते हैं, जहाँ हमारी युवा पीढ़ी अपने विचार, मूल्य और रचनात्मक दृष्टिकोण साझा करती है। आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में शिक्षा को मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ना अत्यन्त आवश्यक है। हमारा प्रयास सदैव यही रहा है कि महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी न केवल अपने विषय में निपुण बनें, बल्कि एक संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक के रूप में समाज में योगदान दें। इस पत्रिका की सम्पादकीय समिति, शिक्षकगण और विद्यार्थियों का मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने उत्साह, परिश्रम और विचारों से इस अंक को विशेष बनाया है।

आशा है कि यह पत्रिका सभी पाठकों में नवचेतना का संचार करेगी और उन्हें अपनी रचनात्मक क्षमताओं को और विस्तार देने के लिए प्रेरित करेगी। आप सबको उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

सप्रेम!

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

सम्पादकीय

महाविद्याालय की पत्रिका ब्रह्मावर्त निर्झरिणी का नवीनतम अंक आपके हाथों में पहुँच रहा है, यह हमारे लिए गर्व और आनन्द का क्षण है। प्रस्तुत पत्रिका हमारे महाविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयास, रचनात्मकता और बौद्धिक प्रतिबद्धता का परिणाम है। हर वर्ष की तरह इस बार भी हमारी पत्रिका सिर्फ घटनाओं या उपलब्धियों का संकलन नहीं है, अपितु यह हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों और सम्पूर्ण शिक्षण समुदाय की रचनात्मकता, सोच और संवेदना की झांकी है। यह पत्रिका वह दर्पण है, जिसमें हमारे महाविद्यालय का बौद्धिक और सांस्कृतिक जीवन झलकता है। आज शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रह गया है। यह वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को समाज के प्रति संवेदनशील बनाती है, जीवन के प्रति दृष्टि देती है और सृजनशीलता को विकसित करती है। इस पत्रिका के लेख, कविताएं, निबन्ध, साक्षात्कार और गतिविधियाँ हमारे छात्र-छात्राओं की उस सोच को अभिव्यक्त करती हैं, जो बदलाव और रचनात्मकता के प्रति सजग हैं और अपने समाज के प्रति उत्तरदायी भी। देखा जाए तो पत्रिकायें परम्परा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य कर सकती है, करती है। हमारी सफलता भी इसी में है कि नई पीढ़ी स्वयं को रचनात्मक तरह से अभिव्यक्त करे। इस बात को युवा न केवल समझ रहे हैं बल्कि अपने अनुभव, संवेदनाएँ और स्वप्न भी अभिव्यक्त कर रहे हैं। यही हमारी ऊर्जा का स्रोत है। शिक्षकों का मार्गदर्शन, विद्यार्थियों का उत्साह और सम्पूर्ण परिवार की सहभागिता इस पत्रिका को सशक्त बनाती है। इस वर्ष भी पत्रिका में आप सबने बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी की। आपके रचनात्मक सहयोग के लिए हम आभारी हैं। हम उम्मीद करते हैं कि पाठक इस अंक में नए विचारों, दृष्टिकोणों और भावनाओं का एक सुन्दर सम्मिलन पाएंगे।

अन्त में, सम्पादकीय टीम उन सभी का हार्दिक धन्यवाद प्रकट करती है, जिन्होंने इस पत्रिका की तैयारी और प्रकाशन में अपना योगदान दिया। आशा है कि यह अंक आप सभी को अवश्य पसन्द आयेगा और हमारे महाविद्यालय की सृजनशील यात्रा को एक नई दिशा देगा।

डॉ० अमित कुमार दुबे
सम्पादक

सम्पादक मण्डल

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

सम्पादक
डॉ० अमित कुमार दुबे

सह–सम्पादक
डॉ० बप्पा अधिकारी

सह–सम्पादक
डॉ० दिनेश कुमार गौतम

सदस्य
डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री

सदस्य
डॉ० दिव्या भदौरिया

सदस्य
श्री अजय कुमार मिश्र

सदस्य
श्री अंकुर मिश्र

महाविद्यालय के वार्षिक आयोजन

अभिव्यक्ति : वार्षिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ छात्रों का सह–शैक्षणिक गतिविधियों में भागीदारी करना शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसी विचार से महाविद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ वर्ष भर सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सत्र 2022–23 से प्रतिवर्ष ''अभिव्यक्ति'' वार्षिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र / छात्राओं को **वीणापाणि सम्मान, अमेय सम्मान, तानसेन संगीत पुरस्कार, यंग अचीवर्स अवार्ड, स्टार परफार्मर अवार्ड** आदि पुरस्कारों से प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है।

उल्लास : वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

स्वस्थ शरीर के लिए शारीरिक व्यायाम तथा खेलकूद की महत्ता के दृष्टिगत वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता ''उल्लास'' का अयोजन महाविद्यालय प्रांगण में सत्र 2022–23 से प्रारम्भ हो गया है। प्रतिभावान् खिलाड़ियों को महाविद्यालय स्तर से आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता उल्लस के अन्तर्गत विविध खेल जैसे लम्बी कूद, ऊँची कूद, चक्का फेंक, 100 मी० दौड़, 400 मी० दौड़ आदि खेलों का आयोजन किया जाता है। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान अर्जित करने वालों को प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है एवं सभी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्लेसमेण्ट कार्यक्रम

महाविद्यालय की प्लेसमेण्ट समिति तथा इंडीवर कैरियर्स, कानपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में व्यावसायिक कौशल (Professional Efficiencyl) विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28–29 फरवरी, 2024 को किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस छात्र–छात्राओं को रिज्यूम बनाना, पी०पी०टी० बनाना, साक्षात्कार की बारीकियों से अवगत कराना, ग्रुप डिस्कशन के बारे में बताना तथा व्यावसायिक कुशलता की बारीकी से अवगत कराया गया। द्वितीय दिवस में छात्रों का मॉक इण्टरव्यू तथा ग्रुप डिस्कशन कराया गया तथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान अर्जित करने वाले छात्रों को प्रमाणपत्र तथा उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में महाविद्यालय के लगभग 100 छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्र की युवा शक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है, जिसकी गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित में कार्य करते हैं। इसका सिद्धान्त और आदर्श वाक्य हैं– ''मैं नहीं आप (Not Me But You)'' जो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का सार बताता है। यह नि:स्वार्थ सेवा की भावना का समर्थन और दूसरे के दृष्टिकोण की सराहना करने व प्राणिमात्र के लिए सहानुभूति रखने का आग्रह करता है। जिसका मुख्य उद्देश्य स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के जरिए छात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास करना है। इसी उद्देश्य से ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई का गठन शिक्षा सत्र 2021–22 में हुआ और तब से लेकर अद्यतन यह गतिमान है, जिससे महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके और राष्ट्र निर्माण / उत्थान में वो अपना योगदान दे सके।

सप्त दिवसीय विशेष शिविर

वर्ष 2024–25 में महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा वर्षपर्यन्त सामान्य, एक दिवसीय तथा विशेष शिविर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सप्त–दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 03 से 09 मार्च, 2025 तक किया गया। इस विशेष शिविर का उद्घाटन दिनांक 03 मार्च, 2025 को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० वी०के० कटियार एवं ग्राम पंचायत बहलोलपुर के ग्राम प्रधान श्री ऋषि दुबे जी के द्वारा हुआ तथा समापन दिनांक 09 मार्च, 2025 को छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के समन्वयक डॉ० श्याम मिश्र जी की उपस्थिति में हुआ।

एक दिवसीय विशेष शिविर कार्यक्रम के अन्तर्गत –

1. दिनांक 14 नवम्बर, 2024 को उड़ान नामक कैरियर विकास एवं महिला स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।
2. दिनांक 11 नवम्बर, 2024 को एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन।
3. दिनांक 17 सितम्बर, 2024 से 02 अक्टूबर, 2024 तक स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
4. दिनांक 14 सितम्बर, 2024 को महाविद्यालय में साड़ी बैंक की स्थापना कर जरूरतमन्द महिलाओं को साड़ी वितरण किया गया।
5. 13 अप्रैल, 2024 को मतदाता जागरूकता शिविर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
6. दिनांक 12 अप्रैल, 2024 को सभी वॉलिंटियर्स गंगा सफाई हेतु अटल घाट गंगा बैराज में अपना योगदान दिया।

सामान्य एवं एक दिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत –

1. दिनांक 26 जनवरी, 2025 को विश्वविद्यालय परिसर पर महाकुम्भ 2025 के थीम पर झांकी प्रदर्शन किया गया।
2. 25 जनवरी, 2025 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
3. 25 अक्टूबर, 2024 को तम्बाकू मुक्त युवा अभियान किया गया।
4. 02 अक्टूबर, 2024 से 16 अक्टूबर, 2024 के मध्य सड़क सुरक्षा पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

5. दिनांक 14 अगस्त , 2024 को हर घर तिरंगा अभियान कार्यक्रम का आयोजन ।
6. दिनांक 13 अगस्त, 2024 को काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर काकोरी ट्रेन एक्शन समारोह का आयोजन किया गया।
7. दिनांक 20 जुलाई, 2024 को महाविद्यालय परिसर में वृहद रूप से वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
8. 21 जून, 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर महाविद्यालय परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस प्रकार वर्षपर्यन्त दिनांक 01 अप्रैल, 2024 से 31 मार्च, 2025 तक महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

रोवर्स–रेंजर्स

व्यक्तित्व का विकास सफलता की कुंजी है। रोवर्स–रेंजर्स के माध्यम से छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। समाजसेवा के अवसर रोवर्स–रेंजर्स के माध्यम से प्राप्त होते हैं। नि:स्वार्थ भाव से, त्याग के भाव से समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दूर करने में रोवर्स–रेंजर्स व्यक्तिगत एवं संगठित रूप से अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

वस्तुत: रोवर्स–रेंजर्स युवाओं का एक ऐसा स्वयंसेवी, गैर–राजनीतिक, शैक्षिक आन्दोलन है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए भेदभाव किए बिना प्रत्येक जाति, धर्म, वर्ग के लिए अपनी सेवाएं देने को तत्पर रहता है। यह 1907 में संस्थापक लॉर्ड वैडेन पॉवेल द्वारा संचालित किए गए लक्ष्य, सिद्धान्त तथा पद्धति के अनुरूप अपने कार्यों का निष्पादन करता है।

महाविद्यालय में रोवर्स–रेंजर्स इकाई स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास कर राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार करना है। महाविद्यालय की रोवर्स–रेंजर्स इकाई का नाम राष्ट्र की नि:स्वार्थ सेवा भावना से ओत–प्रोत विवेकानन्द तथा निवेदिता के नाम पर **विवेकानन्द–निवेदिता रोवर्स–रेंजर्स इकाई** रखा गया है। इस इकाई में पंजीकृत महाविद्यालय के छात्र प्रत्येक वर्ष विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास कर सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ, विपरीत परिस्थितियों में कार्य करने की समझ, समाज में व्याप्त कुरीतियों, गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा आदि से परिचित होते हैं और उनके समाधान हेतु प्रयास करते हैं। जन जागरूकता, राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता, जाति–धर्म–वर्ग–लिंग आदि से परे होकर सेवा भावना अपने अन्दर विकसित करते हैं, प्रत्येक वर्ष रक्तदान करते हैं तथा पुरातात्त्विक धरोहरों की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

महाविद्यालय की रोवर्स–रेंजर्स इकाई द्वारा प्रत्येक वर्ष विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त शिविरार्थियों को सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय में रोवर्स की एक (01) यूनिट तथा रेंजर्स की दो (02) यूनिट का गठन किया गया है। विशेष प्रशिक्षण शिविर में प्रतिभाग करने वाले छात्र अनुशासित सामाजिक समझ एवं समय के पाबंद तथा सहयोग की भावना से युक्त अपने देश के प्रति निष्ठावान हो जाते हैं।

21वीं शताब्दी की हिन्दी आत्मकथाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा के निरूपक तत्व

प्रखर शुक्ल
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उत्स आज से लगभग 5000 वर्ष प्राचीन है, जब सिन्धु घाटी की सभ्यता का भारत में विस्तार हुआ था। यद्यपि सिन्धु सभ्यता की लिपि को आज तक नहीं पढ़ा जा सका है, जिस कारण तद्युगीन विपुल ज्ञानराशि अन्धकार के आवरण में आविष्ट है। इस कारण मोटे तौर पर ऋग्वैदिक काल से भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रवर्तन स्वीकार किया जाता है, जिसके अन्तर्गत ज्ञान–विज्ञान, दर्शन, योग, कला, साहित्य आदि के विविध पहलू समाहित हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंग के रूप में साहित्य की विपुल ज्ञान राशि आज हमारे सम्मुख है। जिसके अन्तर्गत संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट से होती हुई हिन्दी तक साहित्य–सरिता सतत् प्रवाहमान है। भारतीय ज्ञान परम्परा की श्री वृद्धि में हिन्दी साहित्य ने विविध विधाओं के माध्यम से अपना अमूल्य योगदान दिया है। हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं में 'आत्मकथा' विधा महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आत्मकथा में लेखक सिर्फ अपने जीवन की बीती घटनाओं का विवेचन–विश्लेषण ही प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसके साथ–साथ अपने परिवेश और समाज की विशेषताओं का भी निरूपण करता चलता है।

वस्तुत: जीवन और भारतीय ज्ञान परम्परा दोनों का ही फलक इतना व्यापक है कि दोनों एक दूसरे को आवेष्टित करते हैं। अत: जीवन के दस्तावेजी साहित्य–आत्मकथा में भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न आयामों का निरूपण स्वाभाविक ही है। हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लेखन का विकास 19वीं शताब्दी में हुआ, जिसके अन्तर्गत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की आत्मकथा 'आत्मचरित' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत वेदों की महिमा, संस्कृत भाषा और व्याकरण, न्याय दर्शन, योग और अध्यात्म, वेदान्त और उपनिषद्, गणित और विज्ञान आदि पहलुओं की चर्चा की।

20वीं शताब्दी में प्रचुर आत्मकथा साहित्य का सृजन हुआ, जिसके अन्तर्गत विशेष रूप से डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाँधी, श्यामसुन्दर दास, राहुल सांकृत्यायन, हरिवंश राय बच्चन, ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथाएँ उल्लेखनीय हैं। 21वीं शताब्दी की आत्मकथायें– राजेन्द्र यादव, अखिलेश, भीष्म साहनी, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भण्डारी, रमणिका गुप्ता, डॉ० तुलसीराम, अशोक वाजपेयी, विष्णु प्रभाकर, प्रभा खेतान, ममता कालिया, मिथिलेश्वर, सुशीला टाकभौरे आदि की आत्मकथायें– जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करते हुए भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयामों को उल्लेखित करती है।

उपर्युक्त आत्मकथाओं में दर्शन, वेद और उपनिषद्, योग और ध्यान परम्परा, ज्योतिष और खगोलशास्त्र, संगीत और नाट्यशास्त्र, भक्ति और सन्त परम्परा, आयुर्वेद और पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली, लोक ज्ञान, लोक जीवन और परम्परागत सामाजिक संरचना, गाँधीवाद और अहिंसा दर्शन, लोक साहित्य और मौखिक परम्परा आदि के विविध आयामों और उनके प्रभावों का उल्लेख मिलता है।

आत्मकथा साहित्य की वह विधा है, जिसमें लेखक या लेखिका अपने जीवन की बीती घटनाओं का विश्लेषण–विवेचन कलात्मक ढंग से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। आत्मकथा साहित्य लेखक के जीवन के अनुभवों, संघर्षों, विचारधाराओं और समाज की प्रवृत्तियों का जीवंत दस्तावेज होता है। आत्मकथाकार के जीवन को पढ़ते हुए पाठक में जीवन को समग्रता से देख पाने की क्षमता का विकास होता है। पाठक आत्मकथाकार के जीवन में अपने जीवन की झलक देख पाता है; और उसमें स्वयं के जीवन के प्रति भी दृष्टा भाव उसे जीवन की अनेक व्यर्थ उलझनों से मुक्त कर देता है; भारतीय ज्ञान परम्परा भी अंतत: मनुष्य को जीवन के प्रति दृष्टा भाव विकसित करने का आख्यान देती है, जिससे की मनुष्य इसी जीवन में जीवन मुक्त दशा में स्थित हो सके। हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लेखन की शुरुआत 1641 ई० में बनारसीदास जैन द्वारा लिखित आत्मकथा 'अर्द्धकथानक' से हुई। किन्तु सही अर्थों में, गद्य की अन्य विधाओं की भांति आत्मकथा लेखन का भी विकास 19वीं शताब्दी में भारतेन्दु युग में ही हुआ। आगे चलकर यह विधा 20वीं शताब्दी में सशक्त रूप से उभरी, और 21वीं शताब्दी में आत्मकथा साहित्य ने कई नए आयाम ग्रहण किए। प्रस्तुत शोध आलेख में, 21वीं शताब्दी की हिन्दी आत्मकथाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा के निरूपक तत्वों का विवेचन–विश्लेषण प्रस्तुत है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की संकल्पना–

भारत में ज्ञान परम्परा का प्राचीन इतिहास रहा है। जब विश्व के ज्यादातर भागों में मनुष्य खानाबदोश जीवनयापन कर रहा था, तब भारत में ज्ञान की कई शाखाओं का प्रस्फुटन होकर सभ्यता पुष्पित–पल्लवित हो रही थी। ऋग्वेद, भारतीय अस्मिता को विश्व की ज्ञान परम्परा के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित करता है, जो कि मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत है। भारतीय ज्ञान परम्परा का वट–वृक्ष वेदों, उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों, दर्शन, आयुर्वेद, योग, खगोलशास्त्र और समाजशास्त्र आदि शाखारूपी विधाओं के रूप में पुष्ट होकर पल्लवित होता चला आ रहा है। वेदों–उपनिषदों से लेकर अरविन्दो–ओशो तक भारतीय दर्शन प्रणाली का विस्तार है। यह ज्ञान परम्परा केवल धार्मिक ज्ञान और कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं रही है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता पर भी आधारित रही है, जिसका प्रमाण भारतीय दर्शनशास्त्र के अनेक सम्प्रदायों का जन्म और विकास है। हिन्दी के आत्मकथा साहित्य में यह ज्ञान परम्परा विभिन्न रूपों में परिलक्षित होती है।

21वीं शताब्दी की हिन्दी आत्मकथायें और भारतीय ज्ञान परम्परा –

सम्प्रति शताब्दी में कई महत्वपूर्ण आत्मकथायें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें व्यक्तिगत संघर्ष, सामाजिक मूल्यों को लेकर द्वन्द्व एवं सामाजिक परिवर्तन का बखूबी चित्रण हुआ है; इसके साथ ही साथ भारतीय ज्ञान परम्परा की झलक भी देखने को मिलती है। इनमें प्रमुख आत्मकथायें इस प्रकार हैं–

1. राजेन्द्र यादव की आत्मकथा 'मुड़–मुड़ के देखता हूँ' – राजेन्द्र यादव की आत्मकथा प्रमुख रूप से उनके व्यक्तिगत जीवन और साहित्यिक यात्रा का दस्तावेज है, फिर भी इस आत्मकथा में भारतीय ज्ञान परम्परा के कई तत्व देखने को मिलते हैं। जब वह जाति व्यवस्था और पितृसत्तात्मक समाज का विवेचन–विश्लेषण करते हैं, तब उन पर भारतीय दर्शन के अन्तर्गत बौद्ध दर्शन, लोकायत एवं अम्बेडकरवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। आत्मकथा में कई बार जब

वह आत्मनिरीक्षण करते हुए सत्य को खोजने का प्रयास करते हैं, वहाँ वेदान्त दर्शन का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसके अतिरिक्त उनकी आत्मकथा में भक्तिकाल की सन्त परम्परा से मेल खाती हुई सामाजिक चेतना एवं कर्मवाद, लोकजीवन और लोक संस्कृति में उनकी आस्था के प्रमाण मिलते हैं। इस प्रकार उनकी आत्मकथा में भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्व समाजशास्त्रीय और साहित्यिक रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

2. भीष्म साहनी की आत्मकथा 'आज के अतीत'- भीष्म साहनी की आत्मकथा में भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष, भारत विभाजन, सामाजिक बदलाव आदि की झलक देखने को मिलती है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुभवजन्य दृष्टिकोण का परिचायक है। इसके अतिरिक्त भारत की प्राचीन लोककथा विरासत और सामाजिक रीतियों की झलक भी देखने को मिलती है। साहनी जी अपने बचपन के दिनों का उल्लेख करते हुए शिक्षा व्यवस्था एवं गुरु-शिष्य परम्परा की भारतीय विरासत का चित्रण प्रस्तुत करते हैं। अत: अपनी आत्मकथा में भीष्म साहनी ने भारतीय ज्ञान परम्परा के मानवतावाद का निरूपण करते हुए साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत और प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया है।

3. रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'हादसे' तथा 'आपहुदरी' - रमणिका गुप्ता जी की आत्मकथा में उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के गहरे अनुभव एवं प्रतिरोध के स्वर अंकित हैं, जो उन्हें आत्मबोध प्रदान करता है। उनकी आत्मकथा में आदिवासी संस्कृति, उनके ज्ञान और परम्पराओं का चित्रण किया गया है, जहाँ उनका सामाजिक न्याय का दृष्टिकोण भी देखने को मिलता है। उनकी आत्मकथा में कई जगह (भोगवाद) चार्वाक दर्शन का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। उनका आत्मकथा साहित्य भारतीय समाज में स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श को नए सिरे से परिभाषित करता है।

4. सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिंकजे का दर्द' - सुशीला टाकभौरे ने अपनी आत्मकथा में व्यक्तिगत जीवन संघर्षों और सामाजिक उत्पीड़न को बारीकी से चित्रित किया है। जहाँ पर वह सामाजिक न्याय की बात करती है, बौद्ध विचारधारा का प्रभाव दिखाई पड़ता है। स्त्री विमर्श, दलित चेतना, जाति व्यवस्था और भारतीय समाज में ज्ञान की भूमिका पर केन्द्रित यह आत्मकथा सामाजिक बदलाव, न्याय, शिक्षा, नैतिकता, आत्मनिर्भरता पर जोर देती है।

5. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुण्डल बसै' तथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' - इनकी आत्मकथाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत ग्रामीण समाज की संस्कृति, रीति रिवाज, लोककथाओं, लोकगीतों और परम्पराओं का सघन चित्रण देखने को मिलता है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों की स्थिति का विवेचन, शिक्ष्ज्ञा के माध्यम से स्वतन्त्रता एवं आत्मनिर्भरता की वकालत वह करती हैं। अपनी आत्मकथाओं में वह समाज में व्याप्त जाति, लिंग, वर्गगत भेदभाव का चित्रण करते हुए सामाजिक न्याय और नैतिक मूल्यों पर जोर देती है। इस प्रकार, स्त्री-शिक्षा और भारतीय परम्परागत मूल्यों पर आधारित उनकी आत्मकथाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा का निरूपण किया गया है।

6. डॉ० तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' और 'मणिकर्णिका' - इन आत्मकथाओं में वह शिक्षा के महत्व को उजागर करते हुए चित्रित करते हैं कि किस तरह शिक्षा ने उनके जीवन को रूपान्तरित करते हुए, उन्हें आत्मबोध सम्पन्न कर शोषण से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी आत्मकथाओं में तर्कवादी दृष्टिकोण के साथ ही बौद्ध और चार्वाक दर्शन का भी स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। वह दलित समाज की भारतीय ज्ञान परम्परा में भागीदारी और उनके संघर्ष को

उजागर करते हुए डॉ० अम्बेडकर के सामाजिक समता एवं भारतीय नवजागरण के विचारों से प्रेरित दिखाई देते हैं।

7. मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' – अपनी आत्मकथा में मन्नू जी सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए अपने जीवन संघर्षों का दस्तावेज प्रस्तुत करती है। भारतीय साहित्यिक और सांस्कृतिक परम्परा युक्त उनकी आत्मकथा में स्त्री सशक्तिकरण, स्वतन्त्रता की भावना, सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन, आत्मबोध आदि भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्वों का चित्रण मिलता है।

8. प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' – 'अन्या' से 'अनन्या' बनने वाली प्रभा खेतान की आत्मकथा एक स्त्री के संघर्ष और आत्मज्ञान की यात्रा–कहानी है। जीवन के घटनाक्रम का विवेचन करते हुए लेखिका कर्म और भाग्य सिद्धान्त पर विचार करती है। इसके अतिरिक्त उनकी आत्मकथा में स्त्री विमर्श, साहित्यिक चेतना, जीवन के संघर्षों में मुक्ति की खोज, भारतीय जीवन मूल्य, भारतीय समाज में स्त्रियोंकी स्थिति और परम्परागत ज्ञान संरचनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

9. चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' – इस आत्मकथा में लेखिका ने बताया है कि किस प्रकार पूर्वाग्रहों, सामन्ती सोच एवं परम्पराओं ने स्त्री के संसार को सीमित कर दिया; शिक्षा के माध्यम से ही स्त्रियाँ आत्मनिर्भर होकर आत्मज्ञान सम्पन्न एवं शक्तिशाली बन सकती है। जीवन के संघर्षों में धैर्य के साथ, आध्यात्मिक चेतना, भारतीय समाज की विशेषताओं का अंकन, जातिगत संरचनाओं का विवेचन और सांस्कृतिक ज्ञान परम्परा के स्वरूप का विश्लेषण इस आत्मकथा में देखने को मिलता है।

21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा के निरूपक तत्व –

21वीं शताब्दी में हिन्दी का आत्मकथा साहित्य जीवन के बदलते पहलुओं को परिभाषित करता है। वर्तमान शताब्दी की आत्मकथाएँ अधिक मुखरता और बेबाकी से जीवन सत्यों का उद्घाटन करती हैं। चूँकि भारतीय ज्ञान परम्परा अपने आप में इतनी विशिष्ट और व्यापक है कि यह मनुष्य जीवन को प्रभावित करती और आकर देती रही है। अतः जीवन के दस्तावेजी साहित्य आत्मकथा में भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्व कई रूपों में देखने को मिलते हैं–

1. **आध्यात्मिकता और दर्शन –**

भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत अध्यात्म और दर्शन का विशेष स्थान रहा है। जहाँ अध्यात्म श्रेष्ठ जीवन जीने का तरीका है, वहीं दर्शन जीवन को देखने का सही दृष्टिकोण प्रदान करता है। 21वीं शताब्दी की आत्मकथाएँ भारतीय दर्शन, वेदान्त और योग परम्परा को विशेष रूप से महत्व देती है। आत्मकथाकारों ने भारतीय सन्त परम्परा, ध्यान, साधना और वेदान्त के सिद्धान्तों को अपने जीवन के अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। डॉ० तुलसीराम, भीष्म साहनी और राजेन्द्र यादव की आत्मकथाओं में भारतीय दार्शनिक परम्परा को आधुनिक सन्दर्भों में देखा गया है।

2. **शिक्षा और ज्ञान प्रणाली –**

भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्व की सबसे प्राचीन ज्ञान प्रणाली रही है, 700 ईसा पूर्व में तक्षशिला में विश्व का पहला विश्वविद्यालय बनाया गया था, जहाँ 60 से भी ज्यादा विषयों का अध्ययन–अध्यापन होता था। भारतीय गुरुकुल परम्परा,

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और नवजागरण पर 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में व्यापक चर्चा होती है। आत्मकथाकारों ने अपने बचपन की शिक्षा, गुरुओं से प्राप्त ज्ञान और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के प्रभावों का वर्णन किया है। तुलसीराम की 'मुर्दहिया' और सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण आत्मकथाएँ हैं।

3. **भारतीय विज्ञान और चिकित्सा –**

विश्व को भारत द्वारा प्रदत्त आयुर्वेद मनुष्यों के लिए ज्ञात चिकित्सा का सबसे पहला सम्प्रदाय है। चिकित्सा के जनक चरक ने 2500 साल पहले आयुर्वेद को समेकित किया। शल्य चिकित्सा के जनक सुश्रुत हैं। योग, आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा पद्धतियों का उल्लेख इन आत्मकथाओं में देखने को मिलता है। कई लेखक अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए योग और आयुर्वेद का उल्लेख करते हैं। रमणिका गुप्ता और मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों और लोकज्ञान की झलक मिलती है।

4. **भारतीय लोक परम्परायें और साहित्य –**

लोक–कथा और लोक–परम्परायें सभ्यता की शुरुआत से ही हर समाज में विकसित होने लगती हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंग के रूप में ये एक ओर जहाँ सामाजिक प्रतिमानों का निर्माण करती है, वहीं दूसरी ओर ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे लेकर जाती हैं। 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में भारतीय पारिवारिक व्यवस्था, सामाजिक मूल्यों, लोककथाओं और सांस्कृतिक परम्पराओं का विशेष उल्लेख मिलता है। प्रभा खेतान और मन्नू भण्डारी की आत्मकथायें इस सन्दर्भ में विशिष्ट हैं।

5. **राजनीतिक और सामाजिक विमर्श –**

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल धर्म और दर्शन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में गाँधीवादी विचारधारा, भारतीय लोकतान्त्रिक मूल्यों, संविधान और समाज सुधार आन्दोलनों का उल्लेख मिलता है। डॉ॰ तुलसीराम, राजेन्द्र यादव और भीष्म साहनी की आत्मकथाओं में यह विमर्श स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

6. **भारतीय ज्ञान परम्परा और नारीवादी दृष्टिकोण –**

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्रियों के प्रति विशेष आदरणीय भाव रहा है। 21वीं शताब्दी की स्त्री आत्मकथाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा का विश्लेषण नारीवादी दृष्टि से किया गया है। प्रभा खेतान, मन्नू भण्डारी और मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री शिक्षा, परम्परागत रूढ़ियों का खण्डन और नारीवादी चिन्तन को प्रमुखता दी गई है। इनमें भारतीय समाज में स्त्री के बौद्धिक योगदान और ज्ञान परम्परा में उसकी भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया गया है।

7. **दलित और आदिवासी विमर्श में भारतीय ज्ञान परम्परा –**

डॉ॰ तुलसीराम, रमणिका गुप्ता और सुशीला टाकभौरे की आत्मकथाओं में दलित और आदिवासी समाज की पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों को उभारा गया है। इन आत्मकथाओं में वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत ज्ञान के केन्द्रीकरण और हाशिए पर स्थित समुदायों की बौद्धिक परम्पराओं को विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया है।

21वीं शताब्दी का हिन्दी का आत्मकथा साहित्य केवल व्यक्ति–विशेष की कहानी नहीं है, बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा का एक सशक्त दस्तावेज भी है। अत: उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि इन आत्मकथाओं में आध्यत्मिकता, योग, शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य तथा राजनैतिक दर्शन आदि का समावेश हुआ है। इन आत्मकथाओं का अध्ययन भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक सन्दर्भ में समझने के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है।

मेरे भाई

प्रियंका कमल
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग

मेरे व्यथित जीवन के अन्धकार में
मेरे दु:ख में
मेरे संघर्ष में
मुझे शून्य से शिखर तक पहुँचाने के,
सफर का आधार हैं,
मेरे भाई......
वो मेरी अनसुनी बातें
जिसे कभी किसी ने नहीं सुना,
मेरी अनचाही,
वो अनकही बातें जो
मैं किसी से न कह सकी,
उन अनकही बातों की आवाज हैं
मेरे भाई......
मेरे जीवन के हर संघर्ष की
तपिश में,
मेरे अन्तर्मन को उत्साहित करने वाली
मंद शीतल बयार हैं
मेरे भाई......
दुनिया की रीति-रिवाजों से
जब हार गई,
जब टूट गई,
खुद से ही रूठ गई हैं
प्रेम की छांव तलाशती मैं,

उस असीम स्नेह की छांव का एहसास हैं

मेरे भाई......

मेरे जख्मों को बखूबी उकेरा सब ने

पर मरहम न कोई,

बेजुबान पक्षियों की तरह

जब सुकून की चाह में भटकती मैं,

वो सुकून,

मेरे हर जख्म का मरहम हैं

मेरे भाई......

मेरी आँखों के हर आँसू को

मोती बना दें,

मेरी हर चाह को, मेरी हर जिद को

अपनी आँखों के सपने बना लें,

मेरी काबिलियत

मेरी हर बुलंदियों का,

आयाम हैं

मेरे भाई......

माना पिता के हृदय से महफूज

जगह नहीं है कोई,

पिता से तुलना तो नहीं

पर पिता से भी मुकम्मल,

साये का एहसास हैं

मेरे भाई......

लोग कहेंगे

प्रियंका कमल
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग

लोग कहेंगे
कुछ तो लोग कहेंगे।
प्राणों के उद्गम से
जिन्दगी के मध्यान्ह में,
जीवन की रात्रि तक
अन्तिम छोर तक
लोग कहेंगे
कुछ तो लोग कहेंगे।
जब जब तुम अपने
पंख को फैला कर,
आसमान की ऊँचाइयों को
छूना चाहोगी,
तब तब व्यंग्यों की धार से,
तुम्हारे पंख काट दिए जायेंगे
लोग कहेंगे
कुछ तो लोग कहेंगे।
तुम आंचल से लिप्टी रहोगी,
दहलीज में सिमटी रहोगी
अपनी मर्यादा को संजोती रहोगी,
लोग कहेंगे
कुछ तो लोग कहेंगे।
तुम नारी के हर रूप में,
खुद को उभारोगी

तुम परिवार,

समाज को बनाने में

स्वयं को कुर्बान करती रहोगी,

लोग कहेंगे

कुछ तो लोग कहेंगे।

तुम अपनी इच्छाओं को

हृदय में छुपाओगी,

सब सह कर

दूसरों के लिए,

खुशियों की हाट लगाओगी

लोग कहेंगे

कुछ तो लोग कहेंगे।

अपने जिन्दगी के हर सपने को

एक किनारे छोड़कर,

दूसरों के सपने में

खुद विलीन हो जाओगी

लोग कहेंगे

कुछ तो लोग कहेंगे।

सब की दुनिया बनाने में

अपना सर्वस्व लुटाओगी,

विश्व में अपना परचम लहराओगी

तुम दुनिया जीत लोगी

पर लोगों की सोच के सामने हार जाओगी,

लोग कहेंगे

कुछ तो लोग कहेंगे।

धर्म क्या है

कमल शुक्ल
बी०ए० षष्ठम् सेमे०

आध्यात्मिक परिभाषा अनुसार जैसा मेरे मति अनुसार है॥

देखिए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि धर्म का पालन करोड़ों में कोई एक ही करता है। इसका मतलब बाकी जानते ही नहीं पालन करना तो बहुत दूर की बात होगी।

धर्मशील कोटिन्ह मह कोई।

तो समझते हैं धर्म क्या है, इसके लिए अर्धाली समझिये–

धर्म ते विरति योग ते ज्ञाना।

अर्थात् धर्म यह है, जिसके कर्तव्य पालन से, नियम पर चलने से, अनुशीलन करने से वैराग्य उत्पन्न हो अर्थात् व्यक्ति की संसार से आसक्ति नष्ट हो जाए।

इसलिए धर्म के अनुशीलन में जो है, जो भी धर्म मार्ग का पथिक है, उसके लक्षण हैं–

धर्मशील कोटिन्ह मह कोई।

विषय विमुख विराग रत होई।

विषयों से विमुखता और विराग का संचार धार्मिक होने की निशानी है।

जीने का ढंग

कमल शुक्ल
बी०ए० षष्ठम् सेमे०

जीवन व्यर्थ है, ऐसा मत कहो। ऐसा कहो कि मेरे जीने के ढंग में क्या कहीं कोई भूल है कि मेरा जीवन व्यर्थ हुआ जा रहा है ?

जीवन तो कोरा कागज है; जे लिखोगे, वही पढ़ोगे। गालियाँ लिख सकते हो, गीत लिख सकते हो। गालियाँ भी उसी वर्णमाला से बनती है, जिससे गीत बनते हैं। वर्णमाला तो निरपेक्ष है, निष्पक्ष। जिस कलम से लिखते हो, वह भी निरपेक्ष, वह भी निष्पक्ष। सब दाँव तुम्हारे हाथ है। तुमने इस ढंग से जिया होगा, इसलिए व्यर्थ मालूम होता है। तुम्हारे जीने में भूल है और जीवन को गाली मत देना।

लोग कहते हैं, जीवन व्यर्थ है। यह नहीं कहते कि हमारे जीने का ढंग व्यर्थ है।

मैं तुमसे कुछ और कहना चाहता हूँ, मैं कहना चाहता हूँ, जीवन न तो सार्थक है, न व्यर्थ; जीवन तो निष्पक्ष है। जीवन तो कोरा आकाश है, उठाओ तूलिका, भरो रंग। चाहो तो इन्द्रधनुष बनाओ और चाहो तो कीचड़।

माता और पिता में कौन श्रेष्ठ है?

कमल शुक्ल
बी०ए० षष्ठम् सेमे०

मेरी नजर में श्रेष्ठता और तुलना जैसी कोई चीज ही नहीं है क्योंकि जब यह कहा जाता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक है तो श्रेष्ठता जैसा कोई प्रश्न ही नहीं।

व्यवहारिक रूप से यह भी कहा जाता है कि दोनों गृहस्थी की गाड़ी के पहिए हैं तो पहिए बराबर होंगे या एक दूसरे से श्रेष्ठ?

अब आध्यात्मिक दृष्टिकोण से चिन्तन करें तो परमात्मा का एक रूप अर्द्धनारीश्वर है और दोनों आधे हैं बराबर रूप से, यहाँ भी स्त्री पुरुष में समत्य है रेष्ठता जैसी कोई चीज नहीं।

तैत्तरीय उपनिषद् में कहा गया– ''मातृ देवो भव पितृ देवो भव।'' उपनिषद् ने भी दोनों को सम कोटि में रखा, दोनों को देव ही कहा।

अब आते हैं, जिसके कारण लोग भ्रमित हैं। मनुस्मृति में एक श्लोक इस प्रकार है–

उपध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता। सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥

अर्थात् दस उपाध्यायों से बढ़कर एक आचार्य होता है, सौ आचार्यों से बढ़कर पिता होता है और पिता से हजार गुणा बढ़कर माता गौरवमयी होती है।

बस यहीं लोग अर्थ का अनर्थ कर देते हैं; विषय–वस्तु और श्लोक के संकेत की ओर उनका दिमाग ही नहीं जाता और जल्दी जाएगा भी नहीं। यदि श्लोक को सूक्ष्म दृष्टि से आप देखेंगे तो यहां मनु ने शिक्षा देने वाले चार लोगों को चुना और अन्त में सबसे श्रेष्ठ माता को बताया, यह बिल्कुल ठीक है, जहाँ शिक्षा देने की बात आएगी, वहाँ माता प्रथम है क्योंकि शिशु पहले माता से ही सीखता है, फिर पिता आचार्य और उपाध्याय से। इसलिए शिक्षा के धरातल पर इस एक पक्ष में माँ श्रेष्ठ हैं, प्रत्येक धरातल पर नहीं।

मूल विषय यह भी है कि व्यवहार में पहले शक्ति का नाम लेने का चलन है जैसे–

सीता राम

भवानी शंकर

राधा कृष्ण

इससे यह नहीं सिद्ध होता कि सीता पहले है तो राम जी छोटे हो जायेंगे, बल्कि यहाँ आदर का भाव है। आदि–आदि।

कवितायें

चित्रांशी शुक्ला
बी०ए० द्वितीय वर्ष

कविता - 1

क्या करें ?
जब मंजिलें नजर आऐं नहीं,
क्या करें ?
जब रास्ते नजर आएं नहीं,
क्या करें ?
जब हम अकेले हों और
कोई नजर आए नहीं,
क्या करें ?
जब समझ भी समझ आए नहीं,
तब........
कर लेना दिल को मजबूत
और, कहीं रुकना नहीं,
प्रकाश मार्ग को पकड़कर एक,
अंधकार से डरना नहीं,
वहाँ पर कोई शोर ना होगा,
साथ तुम्हारे कोई ना होगा,
तो भी,
समझना खुद को अकेला नहीं,
पथ प्रकाशित करने वाला
होगा तुम्हारे साथ कहीं,
इसलिए........
मुश्किलों से थकना नहीं,

मंजिलों से बँधना नहीं,
बस करना इतना कि
कहीं कभी रुकना नहीं।

कविता – 2

कठिन राह चलने से पहले,
राह पर उतरना होगा,
तपकर सोना बनने से पहले,
मिट्टी से निकलना होगा,
बाधाओं की दीवार लांघकर,
इतिहास नया रचना होगा,
कोई स्वयं अधिकार न देगा,
तुमको खुद उठना होगा,
चन्द्र से शीतल हृदय में अब
सूरज सा तेज भरना होगा,
यदि सपने देखना आता है
तो पूरा करना भी आना होगा,
मत सोचो वो चार क्या बोलेंगे,
वो कहते हैं और कहते ही हैं,
तब खुद को तुम्हें सुनना होगा,
कायर और कमजोर नहीं,
अब वीर तुम्हें बनना होगा,
अब समझाना नहीं किसी को,
स्वयं ही समझना होगा
कि कठिन राह चलने से पहले,
राह पर उतरना होगा।

ब्रह्मावर्त कॉलेज

खुशनुमा
बी०ए० द्वितीय वर्ष

ब्रह्मावर्त कॉलेज के प्रांगण में,
ज्ञान की किरणें फैलती हैं,
विद्यार्थियों के मन में,
नई ऊँचाइयों की चाह जगती है।
गुरुजनों के सान्निध्य में,
ज्ञान के नए द्वार खुलते हैं,
शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित हो,
भविष्य के रास्ते सुलभ होते हैं।
यहाँ के विद्यार्थी बनते हैं,
नए भविष्य के निर्माता,
अपने सपनों को साकार करने,
निरन्तर प्रयासरत रहते हैं।
ब्रह्मावर्त कॉलेज की पहचान,
शिक्षा और संस्कृति का संगम,
यहाँ से निकले विद्यार्थी फहराते,
जीवन में सफलता का परचम।

नारी तू सिंहनी है

खुशनुमा
बी०ए० द्वितीय वर्ष

नारी तू सिंहनी है
नर्म सी मूस्कान हे तेरी,
पर भीतर तू आग है,
दुनिया तुझसे डरती है,
तू खुद में एक भाग्य है।
चुप रहती है, सह लेती है,
पर अन्याय पर दहाड़ती है,
जब भी तू उठ खड़ी हो जाए,
संसार की नींव हिला देती है।
तू लक्ष्मी भी, तू काली भी,
तू रक्षक भी, तू प्रहरी भी,
संघर्षों से नहीं घबराती,
तू खुद में एक सिपाही भी।
हर रूप में तू सुन्दर लगे,
माँ, बेटी, बहन या रानी,
तेरे बिना अधूरी ये धरती,
तू ही इसकी असली कहानी।
तू परछाई नहीं, तू प्रकाश है,
हर अँधेरे की तलाश है,
तेरी हुँकार से जग काँपे,
तू खुद में एक इतिहास है।

'अभिव्यक्ति' : सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

‘उल्लास’ : वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

प्लेसमेण्ट कार्यशाला

रोवर्स एण्ड रेन्जर्स

हिन्दी सेमिनॉर

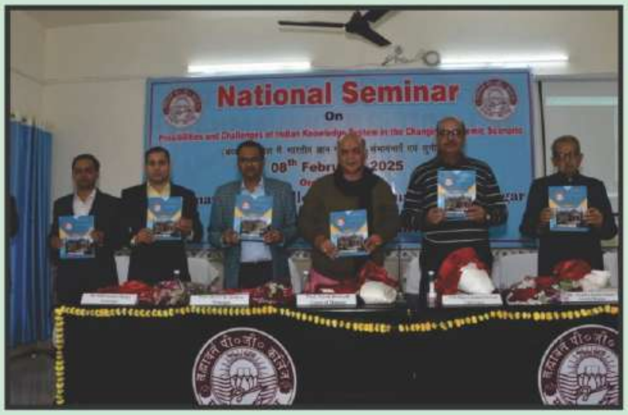

अर्थशास्त्र सेमिनॉर

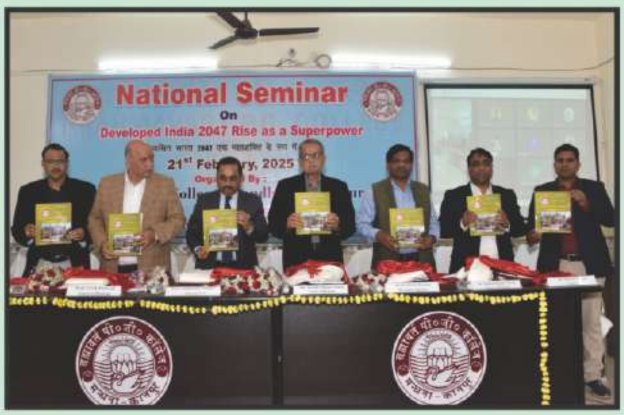

बदलती दुनिया और AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)

कमल शुक्ल
बी०ए० षष्ठम् सेमे०

आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहाँ हर पल दुनिया तेजी से बदल रही है। विज्ञान और तकनीकि ने मानवीय जीवन को जितना आसान बनाया है, उतनी ही बड़ी चुनौतियाँ भी सामने रखी हैं। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है– कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) या जिसे हम आम भाषा में AI कहते हैं।

AI अब केवल विज्ञान की प्रयोगशाला तक सीमित नहीं रहा, बल्कि हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। चाहे वो गूगल सर्च हो, मोबाइल का फेस लॉक, चैटबॉट से बात करना हो या फिर घर बैठे खाने की डिलीवरी – हर जगह AI हमारी मदद कर रहा है। पर सवाल उठता है – क्या AI मानव की जगह ले सकता है ?

AI में गजब की शक्ति है – ये तेजी से सीखता है, डेटा को समझता है और बिना थके काम करता है। लेकिन यह भावनाओं, संवेदनाओं और नैतिकता को नहीं समझता। यहीं पर मानव की भूमिका सबसे खास हो जाती है। हमें AI को अपना सहयोगी बनाना है, प्रतिस्पर्धी नहीं।

बदलते युग में जरूरी है कि हम खुद को भी अपडेट करें। स्कूलों में बच्चों को टेक्नोलॉजी की शिक्षा देना, युवाओं को डिजिटल कौशल सिखाना और समाज में AI के सकारात्मक उपयोग को बढ़ावा देना, अब समय की माँग है।

AI एक अवसर है, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी है। हमें यह तय करना होगा कि तकनीक हमें नियन्त्रित न करें, बल्कि हम तकनीक को सकारात्मक दिशा में ले जायें।

AI के इस दौर में सबसे बड़ी शक्ति इन्सान सोच, संवेदना और समझ है। इस बदलती दुनिया में हमें एक जागरूक, तकनीकि रूप से सशक्त और नैतिक समाज का निर्माण करना है – जहाँ इंसान और AI साथ मिलकर बेहतर भविष्य बना सकें।

THE GLEAM DREAM

Shivsani Tiwari
B.A. 2nd Year

It the tapestry of existence, all threads weave in the in the loom of the time,
Through every challenge, you can climb,
Seeing the dream's is not any crime.
Blaming the situation is not batter,
In this world afford only matter,
Between fear and courage, only you have strength to choose the latter.
A person who can still last, are very few,
But if you can then it will beautiful and new,
Your strength and resolve, a rare and enduring view.
Chasing the stars, you found your way to the dream,
With every step, you followed the path through the darkness, a distant light been at gleam.
Trust the journey, even the struggle, for your purpose is truly divine,
Growth takes a sigh your're doing fine,
No matter how dark the path gets, you were always meant to shine.

ब्रह्मावर्त कॉलेज की शान

रिजवान खान
बी०ए० षष्ठम सेमे०

ब्रह्मावर्त कॉलेज, ज्ञान का है द्वार,
जहाँ सपनों को मिलते हैं नए आकार।
हर दिशा में फैलती है इसकी रोशनी,
शिक्षा की बगिया, हर पल है हरी–भरी।

गुरुओं का साया, जैसे हों देवता,
ज्ञान बाँटते, बनते हैं पथप्रदर्शक नेता।
यहाँ हर छात्र बनता है सितारा,
संघर्षों में चमकता, न हार माने दुबारा।

पुस्तकों की खुश्बू, कलम की आवाज,
यही है ब्रह्मावर्त की खास पहचान आज।
संस्कार, समर्पण और विज्ञान की बात,
ब्रह्मावर्त कॉलेज देता है उज्ज्वल सौगात।

चलो बढ़ाएं इस गौरव को आगे,
हर कोने में नाम हो इसके फागे।
ब्रह्मावर्त कॉलेज, हमारा अभिमान,
तुझसे है रोशन, हमारा हर जहान।

बंद होते सरकारी स्कूल

आकृति शर्मा
बी०ए० तृतीय वर्ष

दरअसल सरकारी स्कूल फेल नहीं हुए हैं बल्कि इसे चलाने वाली सरकारों, नौकरशाहों और नेताओं का फेलियर है। सरकारी स्कूल प्रणाली के हालिया बदसूरती के लिए यही लोग जिम्मेदार हैं, जिन्होंने निजीकरण के नाम पर राज्य की महत्वपूर्ण सम्पत्ति का सर्वनाश कर दिया है। वैसे भी वो राज्य जल्द ही बर्बाद हो जाते हैं या भ्रष्टाचार का गढ़ बन जाते हैं, जिनकी शिक्षा, एक तरफ जहाँ प्राइवेट स्कूलों की फीस बहुत महँगी हो गई है, वचहीं दूसरी ओर सरकारी स्कूलों में कक्षा आठ तक मुफ्त शिक्षा दी जाती है, जहाँ अमीर और गरीब दोनों तरह के छात्र होते हैं।

शिक्षा वह नींव है, जिस पर हम आने वाली पीढ़ी के भविष्य का निर्माण करते हैं। बन्द होते सरकारी स्कूल चिन्ता का विषय हैं क्योंकि सरकारी स्कूल नहीं होंगे तो गरीब बच्चों के भविष्य का क्या होगा ? इन स्कूलों को बन्द करने का मुख्य कारण सरकार कम बच्चे होना बताया जा रहा है जबकि मुख्य कारण 40,000 अध्यापकों के पद खाली हैं जबकि मिडिल स्कूलों को चलाने के लिए गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिन्दी, शारीरिक शिक्षा विषयों के शिक्षकों की आवश्यकता होती है लेकिन सरकार ने 8 वर्षो से जानबूझकर अध्यापकों की भर्ती नहीं की, जिससे स्कूलों में अध्यापकों के पद रिक्त होते चले गए। पद रिक्त होने के कारण एक अध्यापक गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिन्दी सर्विस को पढ़ा रहा था। शिक्षकों के अभाव चलते ही स्कूलों में बच्चों की संख्या कम होती चली गई। जैसा सरकार चाहती थी क्या योजना के अनुसार वैसे ही हुआ। स्कूल में बच्चे कम हों और इन स्कूलों को बन्द करने का मौका मिल जाए। प्राइवेट स्कूलों से बेहतर रिजल्ट सरकारी स्कूलों के आ रहे हैं जबकि हरियाणा सरकार सरकारी स्कूलों को बन्द करने जा रही है तो बच्चों को अनपढ़ रखना चाहती है और युवाओं को रोजगार नहीं देना चाहती।

तुम माँ हो

वर्तिका वाजपेयी
बी०ए० तृतीय वर्ष

तुम माँ हो, तुम हो तो प्रेरणा है,
तुम मेरे जीवन का सार हो,
तुम से है अस्तित्व मेरा,
तुम तो मेरा पहला प्यार हो,
यूँ तो कहते हैं लोग कि मैं तुम्हारे जैसी हूँ,
पर क्या चाँद और चाँदनी एक हैं,
पौधा और उसकी कली एक है,
अगर है तो फिर मैं तुम्हारे जैसी हूँ,
क्योंकि तुम मेरा दर्पण हो,
जिसके बिना मेरी कोई छवि नहीं..........

यह भारतवर्ष हमारा है

अक्षय सविता
बी०ए० द्वितीय वर्ष

यह भारतवर्ष हमारा है,
हमको प्राणों से प्यारा है।
है यहाँ हिमालय खड़ा हुआ,
सन्तरी सरीखा अड़ा हुआ।
गंगा की निर्मल धारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।
क्या ही पहाड़ियाँ हैं न्यारी,
जिनमें सुन्दर झरने जारी।
शोभा में सबसे न्यारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।
है हवा मनोहर डोल रही,
वन में कोयल है बोल रही।
बहती सुगन्ध की धारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।
जन्मे थे यहीं राम-सीता,
गूँजी थी यही मधुर गीता।
यमुना का श्याम किनारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।
तन-मन-धन प्राण चढ़ाऐंगे,
हम इसका मान बढ़ायेंगे
धरा का सौभाग्य सितारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।

THE PSALM OF LIFE

Akshay Savita
B.A. 2nd Year

Life is real! Life is earnest!
And the grave is not its goal;
"Dust thou art, to dust returnest,"
Was not spoken of the Soul.

Not enjoyment, and not sorrow,
Is our destined end or way;
But to act, that each tomorrow
Finds us father than today.

In the world's broad field of battle,
In the bivouac of Life,
Be not like dumb, driven cattle!
Be a hero in the strife!

Let us, then, be up and doing,
With a hearts for any fate;
Still achieving, Still pursuing,
Learn to labour and to wait.

रुपये के रूप-रंग, आकार-प्रकार

डॉ० राघवेन्द्र त्रिपाठी
अर्थशास्त्र विभाग

मैं एक रुपये का सिक्का हूँ, चमकता, खनकता और दमकता सिक्का। मुझे गर्व है कि भारत सरकार ने मुझे एक रुपये का मूल्य अदा करने के सामर्थ्य के साथ स्वीकृत व प्रमाणित किया है। मैं वह बन गया हूँ, जिसका सिक्का प्रत्येक क्षेत्र में चलता है। मेरी शक्ति के कारण ही लोगों ने यह कहावत बनाई है कि 'बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया'।

मेरा प्रभाव अत्यन्त दूर तक जाता है। मैं ऐसा मारक अस्त्र हूँ, जो कभी खाली नहीं जाता। मुझे अस्त्र के रूप में चलाने वाले कई भ्रष्ट लोग रिश्वतखोर अधिकारियों को देखते ही कहते हैं कि इन्हें चाँदी का जूता मारो। यद्यपि आज मैं चाँदी का जूता नहीं हूँ, तथापि यह कहावत और मेरा अस्त्र अचूक है, अमोघ है और किसी सीमा तक ब्रह्मास्त्र है।

मेरी शक्ति, रूप–स्वरूप व प्रभाव को तो आप जानते ही हैं, परन्तु आप में से अधिकतर लोग ऐसे होंगे, जो यह नहीं जानते कि मैं अपने इस लुभावने व चमचमाते रूप तक कैसे पहुँचा। लीजिए, अब मेरे मुख से ही सुन लीजिए।

मैं एक कच्ची धातु के रूप में सदियों से धरती के गर्भ में पड़ा हुआ था। आप में से किसी महत्वाकांक्षी व खोजी ने मेरा पता लगाया और खनिकों को लगाकर काम शुरु करवाया। खान खोदकर मुझे वहाँ से निकाला गया।

मेरा अगला चरण अत्यन्त कष्टकारी था। मुझे पता होता, तो मैं खदान में ही दुबककर बैठा रहता। मुझे उबाला गया, पिघलाया गया और कई रासायनिक क्रियाओं के कष्ट से गुजारा गया। रासायनिक क्रियाओं द्वारा मुझे मेरे साथ चिपकी अन्य धातुओं से अलग कर दिया गया। मुझे लगा जैसे मेरे जुड़वाँ भाई–बहनों को अलग कर दिया गया है। मैं बहुत रोया, तड़पा, लेकिन किसी ने मेरी एक न सुनी।

मुझे टकसाल ले गए। फिर कष्टपूर्ण क्रिया प्रारम्भ हो गई। मुझे साँचे में ढाला गया। मेरे उबलते–पिघलते रूप को विभिन्न बड़ों में परिवर्तित किया गया। फिर मुझे निश्चित आकार के टुकड़ों में काटा गया। मेरे एक ओर अशोक स्तम्भ खोदा गया। उसके नीचे सत्यमेव जयते लिखा गया। अशोक स्तम्भ के बाईं ओर अंग्रेजी में इण्डिया तथा दायीं ओर हिन्दी में भारत लिखा गया। दूसरी ओर मेरा मूल्य लिखा गया। मेरे मध्य बड़ा सा एक का अंक (1) खोदा गया, जिसके दाएँ–बाएँ मंजरियाँ छापी हैं। एक अंक के ठीक ऊपर हिन्दी में रुपये तथा अंग्रेजी में 'RUPEE' लिखा गया। सबसे नीचे मेरा जन्म वर्ष लिखा गया। इससे मेरी आयु का पता चलेगा।

हे मेरे प्रेमियों! इस प्रकार मैं अनेक अवस्थाओं व कष्टों को झेलकर आपके समक्ष पहुँचा हूँ। किसी ने सच ही कहा है कि कष्टों को सहकर ही महत्वपूर्ण बना जा सकता है। आज जो मेरी अवस्था है, उसे मैं इन काव्य–पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त करना चाहता हूँ–

''चाँद सा मुखड़ा, सब तन जख्मी, बिन पाँवों से चलता हूँ।
सबका प्यारा, राजदुलारा, साल–साल मैं बढ़ता हूँ।''

अब आकर आप समझे होंगे कि मैं कहाँ से आया और क्यों इतना प्रिय बन गया हूँ। प्रत्येक व्यक्ति मुझे देखकर चाहता है। लोग मुझे बन्द करके रखना चाहते हैं, जैसे मैं कोई कैदी हूँ। मैं खुला वातावरण चाहता हूँ। बाजार में ठुमकना, थिरकना, इठलाना व इतराना चाहता हूँ। कालाबाजारी करने वालों से मुझे बहुत घृणा है। वे मेरी स्वतन्त्रता छीन लेते हैं और मुझे कैदी बना लेते हैं। मुझे हवा तक नहीं लगने देते। मेरी साँस घुटने लगती है। मैं तो सबका प्रिय हूँ, सबका ध्यान रखना चाहता हूँ और सबके पास समान रूप से रहना चाहता हूँ।

नीली अर्थव्यवस्था (BLUE ECONOMY)

दिनेश कुमार
अर्थशास्त्र विभाग

विश्व बैंक के अनुसार, नीली अर्थव्यवस्था को समुद्री पारिस्थितिकी – तन्त्र के स्वास्थ्य को संरक्षित करते हुए आर्थिक विकास, बेहतर आजीविका और नौकरियों के लिए समुद्री संसाधनों के सतत विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है, नीली अर्थव्यवस्था नवीन व्यवासय माडल के साथ संयुक्त रूप से सामाजिक नवीन व्यवसाय माडल के साथ संयुक्त रूप से सामाजिक समावेशन और पर्यावरणीय स्थिरता के साथ समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास के एकीकरण पर बल देती है, बढ़ते उपभोक्तावादी वस्तुओं के कारण समन्दर को एक खजाना के रूप में देखा जा रहा है, इन महानगरों को भावी विकास के लिए इंजन के रूप में देखा जा रहा है।

पृथ्वी के 70% से अधिक हिस्से को महासागर और समुद्र आवरित करते हैं, जो मानव और पृथ्वी पर प्रत्येक दूसरे जीव के जीवन स्रोत का आधार हैं। महासागर ऊष्मा के विशाल भण्डारके रूप में कार्य करता है और मौसम जलवायु को नियन्त्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समुद्र श्वास द्वारा ली जाने वाली लगभग आधी ऑक्सीजन के लिए जिम्मेदार हैं और कार्बन चक्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

महासागर पृथ्वी की अधिकांश जैव विविधता का घर है और दुनिया भर के एक अरब से अधिक लोगों के लिए प्रोटीन का मुख्य स्रोत है। विश्व के GDP का कम से कम 3–5% महासागरों से प्राप्त होने वाले अर्थव्यवस्था में आय का सृजन, नौकरी आदि के तमाम अवसर प्रदान करके आर्थिक विकास का बढ़ावा देने की काफी क्षमता रखती है। UNO ने 2021–2030 तक की अवधि को सतत विकास के लिए महासागर विज्ञान का संयुक्त राष्ट्र संघ में दशक के रूप में घोषित किया है, उभरती हुई ब्लू इकोनामी आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने के साथ ही समुद्री और तटीय क्षेत्रों को शोषण और पर्यावरणीय गिरावट से बचाना चाहती हैं, यह दशक वैज्ञानिकों, नीति–निर्माताओं, स्थानीय समुदायों, उद्योग और नागरिक समाज के सहयोग के माध्यम से ही सफल किया जा सकता है।

भारत में 7500 किमी॰ से अधिक की तटरेखा और 2.2 मिलियन वर्ग किमी॰ से अधिक का (SEZ) विशेष आर्थिक क्षेत्र हैं। भारत के नौ राज्यों की समुद्री तट तक पहुँच है, जो 200 से अधिक बन्दरगाह हैं। तटीय अर्थव्यवस्था 4 मिलियन से अधिक मछुआरों और तटीय शहरों का जीविकोपार्जन का जरिया हैं, भारत विश्व का दूसरा प्रमुख देश है, जो मछली उत्पादन करता है।

ब्लू इकोनामी की अवधारणा को गुटर पॉली ने अपनी 2010 की पुस्तक– द ब्लू इकोनामी 10 इयर्स, 100 इनोवेशन, 100 मिलियन जॉब्स में पेश किया था। नीली अर्थव्यवस्था विविध प्रकार को गतिविधियों को शामिल करती हैं, जो सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, इनमें नवीकरणीय ऊर्जा, मत्स्य पालन, समुद्री परिवहन, पर्यटन, जलवायु परिवर्तन, अपशिष्ट प्रबन्धनआदि गतिविधियों की परस्पर जुड़ी प्रकृति ब्लू इकोनामी के सतत विकास के लिए आवश्यक समग्र दृष्टिकोण पर

प्रकाश डालती हैं और राष्ट्र अपने स्वास्थ्य और लचीलेपन की रक्षा करते हुए महासागरों की आर्थिक क्षमता का दोहन कर सकते हैं।

महासागर और इसका SEZ जीवित और निर्जीव दोनों संसाधनों के साथ महान आर्थिक अवसर प्रदान करते हैं। जहाँ मत्स्य उद्योग में समुद्री मत्स्य की तेजी से बढ़ती माँग को मछली प्रजातियों के प्राकृतिक भण्डार में कमी देखी जा सकती हैं। 2019-2020 में मत्स्य पालन निर्यात के माध्यम से अर्थव्यवस्था को 46663 करोड़ रुपया का योगदान दिया, जहाँ 1950-51 में मछली पालन 0.75 MMT (मिलियन मीट्रिक टन) था और 2015-20 में बढ़कर 14.2 MMT था, जिनमें समुद्री मछली का उत्पादन 3.7 MMT था। भारत के महाद्वीपीय किनारों पर विविध प्रकार के क्षेत्रीय, जैवजनित और समरूप खनिज भण्डार हैं और भारतीय तटीय राज्यों के समुद्र तटों से इल्मेनाइट मैग्नेटाइट, मोनाजाइट, जिरकोन और रुटाइल जैसे भारी खनिजों की उपलब्धता है, लैकाडिव द्वीपसमूह कच्छ की खाड़ी, मुम्बई के बाहरी शेल्फ और केरल के बैकवाटर के उथले अपतटीय क्षेत्रों से बायोजेनस तलछट की सूचना मिली है, अण्डमान द्वीपसमूह में दक्षिणी-पश्चिमी और पश्चिमी महाद्वीपीय समतल मैगनीज क्रस्ट से फॉस्फोराअट्स जैसे समरूप जमाव की सूचना मिली है। मध्य हिन्द महासागर बेसिन में गहरे समुद्र में मैगनीज, कोबाल्ट और हाइड्रोथर्मल सल्फाइट के भण्डार के प्रमाण मिले हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में समुद्री जिप्सम नमक के बर्तनों में पाया गया है। महासागर में विशाल दुर्लभ मृदा खनिज भी मौजूद है। ये खनिज इलेक्ट्रानिक्स, ऑटोमेटिक आदि उद्योगों के लिए इलेक्ट्रानिक चिप्स के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कच्चे माल हैं।

वर्तमान समय में डिजिटल बैंकिंग का आर्थिक विकास में महत्व

डॉ० भावना गुप्ता
अर्थशास्त्र विभाग

डिजिटल बैंकिंग आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खासकर भारत जैसे देशों में जहाँ डिजिटल समावेशन तेजी से बढ़ रहा है। यह वित्तीय सेवाओं तक पहुँच को आसान बनाती है, लेन–देन को अधिक कुशल बनाती है और व्यवसायों और व्यक्तियों दोनों के लिए लागत कम करती है।

डिजिटल बैंकिंग डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे ई–कामर्स, ऑनलाइन भुगतान और अन्य डिजिटल सेवाओं में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली UPI ने डिजिटल लेन–देन की मात्रा में भारी वृद्धि की है। इससे न केवल वित्तीय समावेशन में वृद्धि हुयी है, बल्कि व्यवसायों और व्यक्तियों दोनों के लिए लेन–देन सरल हो गया है।

डिजिटल बैंकिंग समय की बचत करती है। डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से मानवाधिकारों की रक्षा करने, साइबर सुरक्षा व भरोसा कायम करने व डिजिटल सहयोग के लिए नया ढाँचा प्रस्तुत करती है।

WOMEN EMPOWERMENT

Dr. Arti Dixit
Assistant Professor, Deptt. of Commerce

New income-tax bill : Government will introduce the bill to carry forward the same spirit of "Nyaya" to achieve Good Governance by simplifying provisions and making them responsive.

TDS / TCS rationalization

Reduction in rates : TDS will be rationalized by reducing rates and thresholds, with higher limits for tax clarity. The senior citizen interest deduction limit raised to 21 lakh, and TDS on rent increases to 26 lakh, benefiting small tax payers. Threshold Thresh to collect tax collection at source (TCS) on remittances : Under RBI's Liberalized Remittance Scheme (LRS) is proposed to be increased from 7 lakh to it 10 lakh.

Decriminalization : Provide the relaxation to delay for payment of TCS up to the due date of filling statement was decriminalized.

Voluntary Compliance : Proposed to extend the time-limit to file updated returns, from the current limit of two years, to four years by voluntary compliance by taxpayers who had omitted to report their correct income.

Ease of Doing Business

Streamline the process of transfer pricing : A new scheme will alllow determining arm's length prices for international transactions over a 3-year block period.

Scope of safe harbour rules expanded : With a view to reduce litigation and provide certainty in international taxation.

Senior Citizens' Withdrawl Exemption : Withdrawls from old NSS accounts by senior citizens, post-August 29, 2024, will be tax-exempt. NPS Vatsalya accounts will be treated like regular NPS accounts, within limits.

Employment and Investment

Tax certainty : A presumptive taxation regime will be introduced for non-residents providing services to electronics manufacturing companies and taxation in infrastructure sector AIFs.

Tonnage Tax Scheme for inland Vessels : proposed to be extended to inland vessels registered under the Indian Vessels Act, 2021.

Extension for incorporation of Start-Ups : Extended the period of incorporation by 5 years for start-ups which are incorporated before April 01, 2030.

International Financial Services Centre (IFSC) : Specific benefits to ship-leasing units, insurance offices and treasury centres of global companies which are set up in IFSC.

Extension of investment date for Sovereign and Pension Funds : The investment period for

Sovereign Wealth and Pension Funds in the infrastructure sector is extended by five years.

Personal Income-tax Reforms with special focus on middle class

New tax regime exemption : No income tax payable upto income of 2.12 lakh under the new regime.

Standard Deduction : Raised to 75,000.

Under new tax regime, revise tax rate slabs are as follows :

0 - 4 Lakh	Nil
4 - 8 Lakh	5%
8 - 12 Lakh	10%
12 - 16 Lakh	15%
16 - 20 Lakh	20%
20 - 24 Lakh	25%
Above 24 Lakh	30%

मूल्यों के विकास में विद्यालय का योगदान

डॉ० अर्चना सक्सेना
शिक्षाशास्त्र विभाग

वर्तमान समय में विद्यालयों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। विद्यालय समाज का लघुरूप है क्योंकि बालक इसी विद्यालय में उपस्थित होकर अपने भविष्य के समाज के स्वरूप, सौन्दर्य तथा गुणों के दर्शन करता है। साथ ही उस विद्यालय के वातावरण में उपस्थित अवसरों तथा वातावरण के अन्य कारकों के आधार पर भावी समाज के उन मूल्यों, गुणों, मान्यताओं आदि को स्वीकरोक्ति प्रदान कर हृदयस्थ कर लेता है। अत: संक्षेप में कह सकते हैं कि समस्त जटिल समाज के वृहद मूल्यों का सन्तुलित केन्द्र यदि विद्यालय को माना जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसके अतिरिक्त विद्यालय कुछ अन्य उत्तरदायित्वों का वहन करते हैं। यह महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है कि ये किसी राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति का संरक्षण करते हैं, उसे पुनर्जीवित करते हैं तथा उस संस्कृति को भावी पीढ़ियों में सम्प्रेषित करते हैं। इस प्रकार भारतीयों की शिक्षा के उद्देश्यों, मूल्यों, आदर्शों को वे संरक्षित, पल्लवित तथा सम्प्रेषित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विद्यालय एक गतिशील सामुदायिक केन्द्र है, जो बालक के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

I AM SILENCE

Khushboo Singh
Assistant Professor, Department of English

I dwell in Silence, an unseen flame -
Mistake not stillness for defeat.
When silence stirs, it roars untamed,
The highest march without retreat.

In quietude, my courage gleams
A valor veiled in tranquil streams.
Silence ascends where words decay-
Yet speech can never its path conveys.

Within me, vastness coils and breathes,
The cosmos folds beneath my sheath.
The Sun, in awe, expands its light,
To match my hush of endless might.

The ocean echoes my refrain,
It's tides my tears, it's storms my pain.
The wind, a whisper of my soul,
It's hush, the hymn that makes me whole.

So mark this silence-grave, profound -
A realm where truth and fire resound.

राष्ट्रीय संगोष्ठी

बदलते परिवेश में भारतीय ज्ञान परम्परा : सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ

आयोजक : ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर

प्रायोजक : छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

दिनांक 8 फरवरी 2025

'बदलते परिवेश में भारतीय ज्ञान परम्परा : सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध पक्षों पर विचार करते हुए वर्तमान दौर में उसके समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा उसमें व्याप्त सम्भावनाओं पर विचार विमर्श करना था। संगोष्ठी में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों से आमन्त्रित विशिष्ट वक्तागण, विषय विशेषज्ञ तथा सम्मानित प्रतिनिधियों के व्याख्यान से न केवल भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पक्षों पर अनुसन्धान के मार्ग प्रशस्त हुए, बल्कि विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों तथा व्यक्तिगत शोधकर्ताओं हेतु उपयोगी सामग्री की उपलब्धता भी हुई।

संगोष्ठी में तीन सत्र– उद्घाटन सत्र, तकनीकी सत्र और समापन सत्र का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर के महाविद्यालय विकास परिषद् के निदेशक प्रो० राजेश द्विवेदी जी के साथ विशिष्ट अतिथि प्रो० विवेक द्विवेदी जी–उपाध्यक्ष, एआईफुक्टो तथा प्राचार्य–ब्रह्मानन्द महाविद्यालय, कानपुर; महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव एडवोकेट श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल जी, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रिटायर्ड प्रो० एवं विभागाध्यक्ष प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित जी थे। अपने वक्तव्य में आपने बताया कि वर्तमान दौर ज्ञान–विज्ञान और तकनीक का है, जिसने निःसन्देह हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है, किन्तु यह भी सच है कि आज के भौतिकतावादी दौर में संवेदना मृतप्राय हो रही है, मूल्यों का पतन हो रहा है, मानसिक अशान्ति, नैतिक पतन और पर्यावरणीय संकट से मानवता जूझ रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में बाजारवादी संस्कृति और पैसे को केन्द्र में तथा भावना को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया है। भारत जिसे सदैव से विश्वगुरु का दर्जा दिया गया है, यदि हमें यह अनोखी उपाधि मिली है तो यह निश्चित रूप से हमारे आधुनिक उपलब्धियों से नहीं बल्कि हमारी प्राचीन उन्नत गौरवशाली संस्कृति और विज्ञान के कारण है। भारत ने विश्व को ज्ञान प्रणाली दी, जिसमें विज्ञान के भी कई आयाम शामिल हैं।

वर्तमान समय में डिप्रेशन, स्ट्रेस, एंजाइटी व मेण्टल ट्रॉमा आदि जैसी मानसिक बीमारियों से निपटने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली व्यावहारिक सुझाव देती है। यह दौर भारतीय ज्ञान प्रणाली पर चिन्ता और चिन्तन करने का दौर है। अब समय है भारत के द्वारा विश्व को दिए गए ज्ञान को संजोकर इसका संवर्धन किया जाए तथा भारतीय जनता को प्राचीन ज्ञान

प्रणाली से जोड़ा जाए, तभी इसकी उपादेयता सिद्ध होगी तथा भावी पीढ़ी भारत को गौरवपूर्ण दृष्टि से देखेगी।

संगोष्ठी में एक साथ तीन तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो० सत्यनारायण मिश्र जी, विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, ब्रह्मानन्द कॉलेज, कानपुर तथा उपाध्यक्षता डॉ० अजीत कुमार राय, प्रिंसिपल, सुभाष इण्टर कालेज ने की। इसी तकनीकी सत्र में क्राइस्ट चर्च महाविद्यालय, कानपुर के दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० डी०सी० श्रीवास्तव ने अपने वक्तव्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए वर्तमान सन्दर्भ में उसकी उपादेयता पर अपनी बात रखी। प्रो० राकेश शुक्ल, वी०एस०एस०डी० कॉलेज , कानपुर ने नई शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणाली पर चर्चा करते हुए उच्च शिक्षा में एक विषय के रूप में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता पर बल दिया।

दूसरे समानान्तर तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो० नवनीत मिश्र जी, ब्रह्मानन्द कॉलेज, कानपुर तथा उपाध्यक्षता प्रो० डी०सी० श्रीवास्तव, क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर ने की। इसमें फैकल्टी मेम्बर के साथ-साथ शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों के माध्यम से विषय पर चर्चा-परिचर्चा की।

समानान्तर चल रहे पोस्टर सत्र की अध्यक्षता प्रो० आनन्द शुक्ल, वी०एस०एस०डी० कॉलेज, कानपुर ने की। इस सत्र में शोधार्थियों द्वारा पोस्टर के माध्यम से विषय पर प्रकाश डाला गया।

समापन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार जी द्वारा की गई। इस सत्र में मुख्य अतिथि छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के आई०क्यू०ए०सी० को-ऑर्डिनेटर प्रो० सन्दीप सिंह तथा विशिष्ट अतिथि प्रो० शशिकान्त त्रिपाठी, निदेशक, अटल बिहारी वाजपेयी स्कूल ऑफ लीगल स्टडीज रहे।

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार

प्राचार्य

डॉ० अमित कुमार दुबे

संयोजक

डॉ० बप्पा अधिकारी

आयोजन सचिव

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विकसित भारत 2047 : एक महाशक्ति के रूप में उदय

आयोजक : ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर

प्रायोजक : छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

दिनांक 21 फरवरी 2025

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार जी की अध्यक्षता में दिनांक 21 फरवरी 2025 को 'विकसित भारत 2047 : एक महाशक्ति के रूप में उदय' विषय पर आधारित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनॉर का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में तीन सत्र, जिसमें उद्घाटन सत्र और समापन सत्र सम्मिलित था। उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ एवं आशीर्वचन मुख्य अतिथि प्रो० सुधांशु पांड्या, डीन प्रशासन, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, विशिष्ट अतिथि प्रो० विवेक द्विवेदी, प्राचार्य ब्रह्मनन्द कॉलेज, कानपुर एवं उपाध्यक्ष, एआईफुक्टो, एडवोकेट श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल, सचि0 ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर, संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो० शक्ति कुमार, चेयरमैन, आर्थिक अध्ययन एवं योजना केन्द्र, जे०एन०यू० नई दिल्ली ने विकसित का क्राइटेरिया, किस प्रकार भारत महाशक्ति बनेगा, प्रति व्यक्ति आय एवं मानव विकास सूचकांक आदि का उल्लेख करते हुए1947–2046 से विकसित भारत 2047 एवं 2047 के बाद महाशक्ति के रूप में भारत का परिदृश्य दिखाया, विशिष्ट वक्ता डा० राकेश कुमार सरोज, SCIS विभाग, जे०एन०यू०, नई दिल्ली ने विकसित भारत 2047 के लिए AI की भूमिका पर वृहद चर्चा किया।

प्रथम तकनीकी सत्र के चेयरमैन प्रो० नवनीत मिश्र, ब्रह्मानन्द कॉलेज, कानपुर और को–चैयरमैन डॉ० शैलेन्द्र प्रताप सिंह, पी०पी०एन० कॉलेज, कानपुर ने सत्र को आगे बढ़ाया। इस सत्र में डॉ० अजित कुमार राय, प्रधानाचार्य, सुभाष इण्टर कॉलेज, नेरा, कन्नौज ने अपनी कविता के माध्यम से विकसित भारत 2047 के बहुत से रहस्यों को उजागर करके बहुत ही ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो० पंकज चतुर्वेदी, हिन्दी विभराग, वी०एस०एस०डी कॉलेज, कानपुर ने विकसित भारत 2047 के लिए बहुत ही सरल एवं ज्ञानवर्धक व्याख्या दिया। साथ ही विकसित भारत बनने के लिए समतामूलक समाज को आगे लाने की वकालत भी की। अगले तकनीकी सत्र में मौखिक प्रस्तुति हेतु चेयरमैन प्रो० एस०एन० मिश्र, ब्रह्मानन्द कॉलेज, कानपुर एवं को–चेयरमैन डॉ० बप्पा अधिकारी ने सत्र को आगे बढ़ाया।

समापन सत्र के समय चेयरमैन ऊर्जावान एवं ओजस्वी प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार जी एवं मुख्य अतिथि प्रो० प्रवीन कटियार, निदेशक, पैरामेडिकल विभाग एवं चीफ प्रॉक्टर, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर एवं विशिष्ट अतिथि डॉ० विवेक सचान, स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेण्ट, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर उपस्थित रहे। डॉ० विवेक सचान ने विकसित भारत 2047 एक महाशक्ति के रूप में उदय पर अपना विचार व्यक्त किया। प्रो० प्रवीन कटियार जी ने अपने उद्बोधन में स्वास्थ्य को लेकर बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी दी। साथ ही विकसित भारत के लिए समाज का सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की सहभागिता को उतना ही महत्त्वपूर्ण बताया, जितना कि ऊपरी पायदान पर खड़ा व्यक्ति महत्वपूर्ण है।

यह राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने का उद्देश्य विकसित भारत 2047 पर वृहद स्तर पर चर्चा करते हुए भारत के समृद्धि के विषय में आने वाले अनेक क्षेत्रों लिए शोधकार्य हेतु मार्ग प्रशस्त व उसकी समीक्षा करेगा।

डॉ० दिनेश कुमार	**डॉ० अमित कुमार दुबे**	**प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार**
संयोजक	**आयोजन सचिव**	**प्राचार्य**

संगोष्ठी

आधुनिक संस्कृत साहित्य में अभिनव प्रवृत्तियाँ

आयोजक : संस्कृत विभाग, ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर

प्रायोजक : उ०प्र० संस्कृत संस्थान, लखनऊ

दिनांक 21 अक्टूबर, 2024

आदिकाल से ही संस्कृत साहित्य की गौरवशाली परम्परा अनवरत रूप से समृद्धि को प्राप्त करती रही है। संस्कृत–साहित्य की परम्परा में वैदिक के साथ लौकिक साहित्य के उत्कर्ष हेतु सम्पूर्ण विश्व में साहित्य के सहस्त्रों ग्रन्थों का प्रणयन हुआ। लौकिक साहित्य के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि से प्रारम्भ हुई परम्परा महाकवि भास, कालिदास, भारवि, भवभूति, माघ, अश्वघोष आदि महाकवियों की विश्वप्रसिद्ध रचनाओं से पुष्पित एवं पल्लवित हुई। अर्वाचीन स्वातन्त्र्योत्तर काल में अभिनव कालिदास के नाम से विश्वविश्रुत सनातन कवि महामहोपाध्याय प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी के साथ प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी आदि श्रेष्ठ कवियों की रचनाधर्मिता से यह अक्षुण्ण परम्परा उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त करती गई। आज भी प्रतिवर्ष समसामायिक विषयों पर संस्कृत साहित्य की हजारों रचनाओं का प्रणयन आधुनिक सन्दर्भों को दृष्टिगत रखते हुए हो रहा है। ''**आधुनिक संस्कृत साहित्य में अभिनव प्रवृत्तियाँ**'' को समाज के समक्ष स्थापित करना ही इस एकदिवसीय संगोष्ठी का उद्देश्य रहा है।

संगोष्ठी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० वी०के० कटियार जी के संरक्षण व अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों का प्राचार्य जी द्वारा अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्य जी ने आधुनिक संस्कृत साहित्य में हो रहे अभिनव प्रयोगों की भूरिशः प्रशंसा एवं संस्कृत साहित्य के संवृद्धि हेतु शुभकामनायें दीं। संगोष्ठी में मुख्य वक्त्री के रूप में उपस्थित वी०एस०एस०डी० कॉलेज, कानपुर के संस्कृत विभाग की वरिष्ठ आचार्या प्रो० शोभा मिश्रा जी ने विषय पर मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा विशिष्ट व्याख्यान डी०ए–वी० कॉलेज, कानपुर के संस्कृत विभाग के वरिष्ठ आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो० विनोद कुमार पाण्डेय जी ने दिया। संगोष्ठी में उपस्थित अन्य गणमान्य अतिथियों में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित संस्कृत भारती पूर्वी उ०प्र० क्षेत्र के संगठन मन्त्री श्री प्रमोद पण्डित, सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित संस्कृत विभाग दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई, जालौन से डॉ० सर्वेश कुमार शाण्डिल्य आदि ने भी वक्तव्य दिए।

संगोष्ठी का संचालन संगोष्ठी–सचिव एवं संस्कृत विभाग, ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर नगर के सहायक आचार्य डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री ने किया तथा स्वागत उद्बोधन उ०प्र० संस्कृत संस्थान, लखनऊ के प्रतिनिधि के रूप में पधारे श्री वामदेव संस्कृत महाविद्यालय, बाँदा से डॉ० रत्नेश द्विवेदी ने किया। संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ० अमित कुमार दुबे, डॉ० बप्पा अधिकारी, डॉ० दिनेश कुमार गौतम, डॉ० दिव्या भदौरिया आदि समस्त प्राध्यापक तथा महाविद्यालय स्टॉफ के साथ–साथ लगभग 100 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री
आयोजन सचिव

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री प्रेम नारायण गुप्त	अध्यक्ष
2.	श्री महेन्द्र कुमार शुक्ल	उपाध्यक्ष
3.	श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'	सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक
4.	श्री राकेश कुमार मिश्र	संयुक्त मन्त्री
5.	श्री शंकर दत्त त्रिपाठी 'एडवोकेट'	सदस्य
6.	श्री बाँके बिहारी शुक्ल	सदस्य
7.	श्री सुधीर कुमार मिश्र	सदस्य
8.	श्री महेश चन्द्र मिश्र	सदस्य
9.	श्री रमन कुमार मिश्र	सदस्य
10.	प्रो० (डॉ०) विपित्य कुमार कटियार	पदेन सदस्य
11.	डॉ० बप्पा अधिकारी	सदस्य / प्रतिनिधि
12.	श्री दिनेश कुमार गौतम	सदस्य / प्रतिनिधि
13.	श्री अजय कुमार मिश्र	सदस्य / प्रतिनिधि

श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक

मन्धना, कानपुर

CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS
INTERCOLLEGIATE@CSJMU2024
POWER LIFTING| WEIGHT LIFTING | BEST PHYSIQUE
17-18 OCTOBER 2024 | GYMNASIUM HALL

CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS
INTERCOLLEGIATE@CSJMU2024
POWER LIFTING| WEIGHT LIFTING | BEST PHYSIQUE
17-18 OCTOBER 2024 | GYMNASIUM HALL

ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज
मन्धना, कानपुर